पं. हीरालाल शास्त्री के लोकगीतों में नारी उत्थान

राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री न सिर्फ राजस्थान का अपितु संपूर्ण भारत वर्ष का गौरव कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। पं. हीरालाल शास्त्री जी में बचपन से ही दूसरों की मदद करने की गहरी तलब थी। वे अपने विद्यार्थी काल में भी अपने मित्र सहपाटियों को अलग से पढ़ाया करते थे। जैसे–जैसे बड़े हुए लोक हित की कामना बढ़ती गयी उनका रूझान समाज, देश की सेवा की ओर मुड़ गया पराधीन देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में वे जेल भी गये, राजस्थान में प्रजामण्डल संघ की स्थापना के साथ ही तत्कालीन बिखरी रियासतों को एक धागे में पिरो संयुक्त राजस्थान की स्थापना की। तथा आर्थिक और वित्तिय परिस्थितियों से जूझते तत्कालीन राजस्थान के प्रथम मुख्य मंत्री का पदभार संभाला किन्तु समाज कल्याण की कसक उस पद पर रहकर वे पूरी नहीं कर पा रहे थे इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि देश की दशा सुधारने के लिए देश की जड़ें अर्थात् गाँवों की दशा को पोषण देना आवश्यक है। अर्थात् गाँवों की कुरीतियों को दूर–दूर कर गाँव का विकास सर्वप्रथम करना आवश्यक है। गाँवों में आकर प्रत्यक्ष रूप से उन्होंने देखा और अनुभव किया कि ग्रामीण समाज में व्याप्त गरीबी, अज्ञानता तथा भय के कारण जीवन का रस ही लुप्त हो गया है। इसमें भी महिलाओं की स्थिति अति गंभीर है समाज में रस लाने हेतु महिलाओं में नवजीवन का संचार करने हेतु क्रान्ति लानी होगी और यह क्रान्ति शास्त्री जी लेकर आए बिना किसी हथियार के, अपनी कलम की ताकत से सजे अपने लोकभाषा में लिखे सरल व सहज गीतों के माध्यम से।

शास्त्री जी ने अपनी आत्मशक्ति को भूली नारी शक्ति को जागृत करने व अपनी ताकत को पहचानने के लिए प्रेरित करते हुए गीत लिखे –

1. नारी मरदानी तू आबरू की अम्मर सैनाणी। नारी मरदानी।
2. घर की शोभा नारी सै जी सुन लो चित्त लगाय।
   घर सूनो बिन नारी कैसजी, बात कहूँ समझाय।।
3. चैतसी भारत की नारी रै चैतसी जैपर की नारी।
   नार सुपातर होय साधना साधै वा नारी।।
4. हां सखी! थे बात विचारो। आपणा घर को काम संवारो।
   पैली थे विद्या अपणाओं। मार अविद्या दूर भगाओं।।
5. चेतो चेता ए लुगायों बाजी राखणी ए।
   लागी मूरखता की छाप, जीने बेग मिटावो आप।
   अब तो नींद काडली धाप, बाजी राखणी ए।।
6. थे तो बार उघाड़ो, सारो आफत वारो घूँघटो।
   लाग्यो भोत बड़ो या पाप, अब तो दूर हटाओ आप,
   सुधरें मिनख जमारा प्यारो, बार उघरों घूँघटो।।

शास्त्री जी ने घर की नींव अर्थात् नारी के जीवन की पीड़ा को बखूबी समझा और उस पीड़ा को उन्होंने अपनी लोक भाषा में सहज व सरल बनाते हुए जन–जन तक पहुँचाया। शास्त्री जी जानते थे यदि समाज में सुधार लाना है तो नारी की बिगड़ी स्थिति में सुधार लाना होगा। जो नारी झूठी और थोथी रीति–रिवाज में जकड़ी है उसे इस झूँठ पाखण्ड के जाल से निकालना होगा। परम्परा और रीति–रिवाज के नाम पर अशिक्षा, पर्दाप्रथा और झूठे लोक लाज की बेड़ियों से नारी को मुक्त कर, सशक्त बनाना होगा। क्योंकि परिवार का आधार और गृहलक्ष्मी नारी को ही कहा गया है। गृहलक्ष्मी को अज्ञानता के अंधकार से बाहर लाए बिना किसी भी घर में सुख–समृद्धि व ज्ञान का उजाला नहीं हो सकता। नारी की स्थिति में सुधार लाकर ही घर–परिवार गाँव व समाज की स्थिति को सुधारा जा सकता है। इस हेतु शास्त्री जी ने सरकारी सेवा और सुखमय शहरी जीवन का परित्याग कर ग्रामीण महिलाओं व ग्रामीण समाज में युग परिवर्तन के लिए नया प्रयोग शुरू किया। समाज के प्रत्येक पीड़ित वर्ग की पीड़ा को शास्त्री जी ने अपनी पीड़ा समझा उनके शब्दों में

"निर्धनता अज्ञान नीति ने
जीवन का रस छीन लिया।
मरणानन्तर जीवनदायक
प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो।।"

यहाँ प्रलय से उनका अभिप्राय मानव जीवन में समग्र क्रान्ति से था। क्योंकि प्रलय आने पर पहले का सब कुछ नष्ट होकर उसके बाद नए जीवन की शुरूआत होती है समाज में व्याप्त गरीबी, अज्ञानता और भय के कारण जीवन का रस रूपी आनन्द जैसे बिलकुल लुप्त ही हो गया है। इसलिए इसमें नव जीवन का संचार लाने हेतु क्रान्ति करने की बहुत आवश्यकता थी और वे आजीवन इस प्रलय की प्रतिक्षा करते रहे। उनके सारे कार्यकलापों, अभियानों और गतिविधियों का एक ही लक्ष्य रहा कि किसी भी प्रकार से जनता में जागृति आए और वह सुंदर सुखमय समाज की स्थापना के लिए अग्रसर हो। समाज के पीड़ित वर्गों में नारी व बालिका–जीवन में रची बसी बुराईयों ने उन्हें सर्वाधिक आहत किया। कन्या जन्म लेने पर अफसोस करने वालों को समझाते हुए शास्त्री जी ने अपने करूण शब्दों में कहा है –

कन्या खड़ी पुकारे चित्तद्यो सुणो र समझो।
थांका ही घर में जनमी म्हांने भी थाकी समझो।।

छोरी हुइ सुण्यां सँ अफसोस थे करो छौं।
छोरयां जस्या ही छोरा सबनै समान समझो।।
थे ही जनय का दाता थे ही दुभांत राखो।
यो पाप को घड़ों तो फूट्यां सरैलो समझो।।

अपने ही घर में जन्म लेने के बाद परायी समझे जाने की पीड़ा को शास्त्री जी ने बहुत खूब समझा और कहा लड़की हुई सुनते ही अफसोस तुम करते हो लड़की जैसे ही लड़के सबकों समान समझो। माता–पिता को समझाते हुए कहा – तुम ही जन्म के दाता तुम ही भेदभाव करते हो ऐसा करके जो तुम ये पाप का घड़ा भर रहे हो इसको तो फोड़ना ही पड़ेगा तुम सब समझो।

नारी मरदानी .... नारी की सोई शक्ति को जाग्रत करने हेतु शास्त्री जी ने उसे अपने गीत में झकझोरते हुए कहा –

नारी मरदानी – अर्थात् तू शक्ति हीन अबला नहीं है अपितु, तू साक्षात् शक्ति स्वरूपा सबला है। मरदानी है, व आबरू के लिए लड़ने वाली अमर सैनानी है। अब इधर–उधर मदद के लिए मुँह मत ताको अपितु अपनी शक्ति को पहचान और अपने घर की तरफ देखो इसकी बिगड़ी स्थिति और बदत्तर हालात को सुधारों तुम्हारे बच्चे बार–बार रोटी मांग रहे हैं तथा न मिलने पर बिलख–बिलख कर रो रहे हैं। तुम्हारे कलेजे के टुकड़ों, की स्थिति को सुधारो – तुम जागो नारी मरदानी।

नारी को परम्परा और रीति–रिवाजों की आड़ में घर में कैद करने व चार दिवारी में बंद रख घूँघट के नाम पर उसका मुँह बंद कर उसकी जानवर से भी बदतर दशा कर देने वालों से उसे सावधान कर समस्त नारी समाज से आग्रह करते हुए कहा है कि –

"थे तो बार उघाड़ो सारो आफत वारो घूँघटो।
लाग्यो भोत बड़ो या पाप, अब तो दूर हटावो आप।
सुधरै मिनख जमारों प्यारो, बार उघारों घूँघटो।।
डील लुखाया सत नहिं रैणी, मनका बल से ही सत रैणो।
जूझो वीर मौम की नारी बार उघारों घूँघटो।।
बेमारी थे यो ही भुगतो, पड़दा में कुष्ठ ज्यादा भुगतो।
आधी चंगी बार बणो थे बार उघारों घूँघटो।।"

तुम तो अभी हटाओं ये सारी आफत वाला घँघट। तुम स्त्रियों पर लगा ये बहुत बड़े पाप जैसा भारी बोझ के समान है। इसे अब तो दूर हटाओं। इसे हटाने से तुम्हारा संपूर्ण मनुष्य जन्म सुधर जाएगा। शरीर छिपाने से नारी का सतीत्व पवित्रता नहीं रहती बल्कि आत्मिक एवं मन के बल से सतीत्व की रक्षा होता है। इस गलत फहमी से बाहर निकलो इससे जूझो और लड़ो। तुम वीर भूमि की नारी हो, बस अभी हटाओं ये घूँघट, बिमारियां में तुम यूँ ही भंगत रही हो, परदे में छिपाने व किसी को नहीं दिखाने से कुछ ज्यादा ही भुगत रही हो आंधी स्वस्थ तुम अभी हो जाओगी जब ये आफत वाला घूँघट हटा दोगी। इतना ही नहीं पति को जहाँ समझाने की आवश्यकता वहाँ नारी की इज्जत नहीं करने वाले व उसे निचले तबके का व दीन–हीन समझे जाने वाले पुरूषों, पतियों को समझाते हुए कहते हैं –

घर की सोभा नार सैं जी सुणज्यों चित्त लगाय।
घर सूना बिना नार कैंसजी, बात कहूँ समझाय।।
नर नारी का मेल सैंसजी घर में आनन्द होय।
नर–नारी की फूट सैंसजी दुखड़ो घर में होय।।
सीख की सुण लीज्यों नारी।
नारी को आदर कर्सोजी रामचन्द्र भगवान।
सीता जी बनवास नैसजी लीनों आनन्द मान।।
सीख की सुध लीज्यो नारी।।

घर की शोभा नारी से है जी सुन लो चित्त लगा के घर सूना बिना नारी के है सी बात कहूँ समझा के अगर घर की शोभा नारी धर में ना हो तो घर सूना ही होता है। शास्त्री जी ने सुखी घर के लिए नर व नारी दानों का आपसी मेल–मिलाप बहुत आवश्यक बताया है। यदि नर–नारी में आपस में फूट हो तो घर में कई तरह के दुःख व परेशानियाँ पैदा हो जाती है। नर–नारी के आपसी प्रेम व पवित्र बंधन के आदर्श के रूप में पं. हीरालाल शास्त्री जी ने श्री रामचन्द्र व सीता जी का उदाहरण देते हुए कहा है कि नारी को माँ, पत्नी तथा भक्त प्रत्येक रूप में श्री रामचन्द्र जी ने आदर किया है और सीता जी ने भी पति सेवा का परम् धर्म मानते हुए बनवास को आनन्द मान कर 14 वर्ष व्यतीत किए।

इस प्रकार शास्त्री जी ने समाज में व्याप्त नारी की समस्याओं को समझ कर हाथ पर हाथ रखने के बजाय अपने गीतों में अपने भावों को लेखनी के माध्यम से उकेरा तथा जन सामान्य के भावों को उन्हीं की भाषा में सरल व बोध गम्य रूप में लोकगीतों के रूप में जन–जन तक पहुँचाया तथा द्वार–द्वार पर ज्ञान व जन जागृति का अलक जगाया। साथ ही नारी स्थिति में सुधार लाकर सुंदर, सभ्य व शिक्षित समाज के निर्माण में अतुलनीय योगदान दिया। शास्त्री जी की नारी उत्थान की बेल पुष्पित व पल्लवित होकर अपने गुणों की महक न सिर्फ राजस्थान व भारत में अपितु देश–विदेश में भी वनस्थली विद्यापीठ / यूनिवर्सिटी के नाम से सराही जा रही है और उनके सपनों की यह पवित्र भूमि आगे भी नारी उत्थान में प्रयासरत रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1.शास्त्री हीरालाल, जीवन कुटीर के गीतो की महावार पोथी 449, 577, 450, 448
2.शर्मा डॉ. मदनगोपाल , वनस्थली का वानप्रस्थी पण्डित हीरालाल शास्त्री के तपःपूत व्यक्तित्व एंव कृतित्व का संक्षिप्त रेखाकन।

प्रतिभा पारीख
शोधार्थी संगीत
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)